तबला वादन की विस्तारशील बन्दिशों का तुलनात्मक अध्ययन (दिल्ली, अजराड़ा, फर्रूख़ाबाद एवं बनारस घराने के विशिष्ट सन्दर्भ में)

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा की संगीत विषय में पीएच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

रूपरेखा

2014

निर्देशिका :
डॉ0 नीलू शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर (तबला)

शोधार्थिनी :
कीर्ति श्रीवास्तव
संगीत (तबला)

संगीत विभागाध्यक्षा
प्रो0 सुभद्रा कुमारी सतसंगी

कला संकाय प्रमुख
प्रो0 उर्मिला आनन्द

कला संकाय (संगीत विभाग)
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

भूमिका

उत्तर भारतीय संगीत के अवनद्ध वाद्यों में तबला एक लोकप्रिय वाद्य के रूप में प्रतिष्ठित है। जिसका स्वतंत्र साहित्य, बोल–बंदिशें व विशिष्ट वादन शैली विकसित है, जिसके फलस्वरूप यह समस्त चर्म वाद्यों में अग्रणी व उन्नत अवस्था को प्राप्त कर पाया है। तबले में घराने का सूत्रपात् सत्रहवीं शताब्दी के लगभग हुआ। सर्वप्रथम तबले में उस्ताद सिद्धार खाँ द्वारा दिल्ली घराने की नींव पड़ी। धीरे–धीरे क्षेत्र विशेष व अपनी वादन विशेषताओं के प्रदर्शन हेतु कलाकारों ने स्वपरम्परा का निर्माण किया। इन कलाकारों के पास विद्या का भण्डार, रचनाओं की विविधता, दीर्घ साधना का तेज, कला के प्रति समर्पण की निष्ठा तथा अपने घराने की विशेषताओं को अक्षुण्ण रखने का प्रयास अप्रतिम और वंदनीय था। फलस्वरूप दिल्ली घराने से विकसित होता हुआ यह वाद्य अन्य अनेक शाखाओं के रूप में विस्तार प्राप्त करता गया, जिसे आज अजराड़ा, लखनऊ, बनारस, फ़र्रुख़ाबाद व पंजाब घराने के रूप में जाना जाता है।

इन समस्त घरानों में जहाँ पूरब में खुले और गम्भीर बोलों का बाहुल्य है, तो पश्चिम में मधुर और कर्णप्रिय बोलों की प्रचुरता। एक में सागर की गहरायी है, तो दूसरे में पहाड़ी नदी की शोख चंचलता।

तबला वाद्य के घरानों की वादन शैली का प्रस्तुतीकरण विशेष रूप से 'बन्दिशों' के माध्यम से किया जाता है। बन्दिश का शाब्दिक अर्थ है– 'बांधना' एवं 'कार्य योजना' अर्थात् 'Precautionary Measure' या 'To plan before hand' भी कहते हैं। जिस प्रकार उपन्यास के लिए कथावस्तु होती है, कविता या निबन्ध के

लिए विषय होता है, उसी प्रकार तबला वादन के प्रस्तुतीकरण के विषय को 'बन्दिश' कहते हैं। साधारण अर्थों में किसी भी रचना को ताल शास्त्र के अनुरुप 'बांधना' ही बन्दिश कहलाता है।

विभिन्न घरानों के माध्यम से प्रचलित रचनाओं को परम्परागत बन्दिशें भी कहा जाता है। यह बन्दिशें ही इस वाद्य का मूल आधार व वादन स्वरुप हैं। इन बन्दिशों को विधिवत् रुप में प्रस्तुत करने में ही इस वाद्य का मूल निहित है। इसलिये बन्दिशों की उपलब्धता एवं सीखने व आत्मसात करने की प्रक्रिया पीढ़ी दर पीढ़ी अनवरत् चली आ रही है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि तबला वादन हेतु जिन विद्वान कलाकारों ने अथक परिश्रम एवं समर्पण से अनेकानेक बन्दिशों की रचनायें की हैं, उनका महत्त्व संस्थागत शिक्षण में भी उतना ही होना चाहिए, जितना कि गुरु–शिष्य परम्परा में होता आया है। तबला वादन में अनेकानेक बन्दिशों की रचनायें हुई हैं जैसे– पेशकार, कायदा, रेला, टुकड़ा, गतें इत्यादि। इन बन्दिशों के विभिन्न रचना प्रकार पृथक–पृथक घराने में प्रचलित हैं। प्रत्येक घराने की बन्दिश में उस घराने की विशेषतायें समाहित होती हैं। भाषा एवं लय की समन्वयात्मक रचनायें, महान तबला वादकों की इस वाद्य को अमूल्य देन है।

बन्दिशों के मुख्यतः दो प्रकार तबला वादन में प्रचलित हैं – अविस्तारशील बन्दिशें व विस्तारशील बन्दिशें। विस्तारशील बन्दिशों के वर्ग में वे सभी बन्दिशें सम्मिलित हैं, जिनके मूल स्वरूप के वादन के पश्चात् उसका विस्तार भी किया जाना सम्भव होता है। इस वर्ग की बन्दिशों में मुख्यतः पेशकार, कायदा, रेला इत्यादि बन्दिशें

सम्मिलित हैं। घरानों के अनुरूप इन विस्तारशील बन्दिशों में निहित रचना प्रक्रिया, वर्णों के संयोजन, प्रस्तुतीकरण की रीति, वादन तकनीकि, खाली–भरी की संकल्पना, विस्तार की रीति, तिहाई के प्रयोग इत्यादि तत्वों के आधार पर वैभिन्न्य दृष्टिगत् होता है। जिनके परिणामस्वरूप ये बन्दिशें (पेशकार, कायदा, रेला) प्रत्येक घराने में अपनी पृथक पहचान या अस्तित्व रखती हैं, क्योंकि प्रस्तुत शोध कार्य में तबला वाद्य के चार घरानों दिल्ली, अजराड़ा, फर्रुख़ाबाद, बनारस के विशिष्ट सन्दर्भ में अध्ययन किया जायेगा, अतः इन घरानों के अनुरूप विस्तारशील बन्दिशों में निहित तत्वों पर प्रकाश डालने, तुलना करने व पूर्वजों द्वारा इस कला के लिये स्थापित सिद्धान्त एवं सांस्कृतिक धरोहर सवंर्धित व सुरक्षित रह सके इत्यादि बिन्दुओं को दृष्टिगत् रखते हुए **‘तबला वादन की विस्तारशील बन्दिशों का तुलनात्मक अध्ययन (दिल्ली, अजराड़ा, फर्रुख़ाबाद एवं बनारस घराने के विशिष्ट सन्दर्भ में)’** शोध विषय का चयन किया गया है।

<u>विषय कथन</u> :–

‘तबला वादन की विस्तारशील बन्दिशों का तुलनात्मक अध्ययन (दिल्ली, अजराड़ा, फर्रुख़ाबाद एवं बनारस घराने के विशिष्ट सन्दर्भ में)’

<u>अध्ययन के उद्देश्य</u> :– **(1)** घरानों के अनुरुप पेशकार में निहित तत्त्वों का अध्ययन करना।

(2) घरानों के अनुरुप कायदा में निहित तत्त्वों का अध्ययन करना।

(3) घरानों के अनुरुप रेला में निहित तत्त्वों का अध्ययन करना।

(4) घरानों के अनुरुप पेशकार, कायदा, रेला में निहित तत्त्वों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

(5) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तबला वादन की विस्तारशील बन्दिशों के पारम्परिक स्वरूप में आये परिवर्तन का अध्ययन करना।

परिसीमांकन :– प्रस्तुत शोध कार्य समय सीमा को ध्यान में रखते हुए विस्तारशील बन्दिशों के अन्तर्गत पेशकार, कायदा एवं रेला के अध्ययन तथा कम से कम 50 बन्दिशों के प्रतिलेखन तक ही सीमित रहेगा तथा बन्दिशों का प्रतिलेखन तीनताल के सन्दर्भ में किया जायेगा।

अध्ययन विधि :– विश्लेषण, साक्षात्कार एवं निरीक्षण विधि।

अध्ययन के स्रोत :– पुस्तकालय, संग्रहालयों, दृश्य–श्रव्य सामग्री, इण्टरनेट, रेडियो, टेपरिकार्डर, सी0डी0, डी0वी0डी0 इत्यादि, अर्थात् सम्बन्धित तबला वादन की घरानेदार बन्दिशों में निहित दाब–गाँस एवं अन्य तत्वों का अध्ययन ध्वन्यांकन उपकरणों के माध्यम से किया जायेगा।

अध्यायों की रुपरेखा :–

❖ **प्रथम अध्याय** – **(i)** भूमिका : समस्या का प्रादुर्भाव, सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं समस्या का औचित्य।

(ii) तबला वादन में बन्दिशें : अर्थ प्रकार एवं महत्त्व

❖ **द्वितीय अध्याय** – **(i)** तबला वादन में पेशकार : अर्थ, व्याख्या एवं महत्त्व

(ii) घरानों के अनुरूप पेशकार में निहित तत्त्व एवं विस्तारप्रक्रिया

❖ **तृतीय अध्याय** – **(i)** तबला वादन में कायदा : अर्थ, व्याख्या एवं महत्त्व

(ii) घरानों के अनुरूप कायदा में निहित तत्त्व एवं विस्तारप्रक्रिया

❖ **चतुर्थ अध्याय** – **(i)** तबला वादन में रेला : अर्थ, व्याख्या एवं महत्त्व

(ii) घरानों के अनुरूप रेला में निहित तत्त्व एवं विस्तारप्रक्रिया

❖ **पंचम अध्याय** – घरानों के अनुरूप पेशकार, कायदा एवं रेला : तुलनात्मक अध्ययन

❖ **षष्ठ अध्याय** – तबला वादन की विस्तारशील बन्दिशें : पारम्परिक स्वरूप एवं परिवर्तन

❖ **सप्तम अध्याय** – उपसंहार

उपरोक्त रूपरेखा के बिन्दुओं में विद्वान् कलाकारों के विचारों व उनके द्वारा बताए गए अनुभवों के अनुरूप परिवर्तन सम्भावित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

- मिश्र, डॉ0 विजय शंकर, तबला पुराण, कनिष्का पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली 2005।
- माईणकर, सुधीर, तबला वादन में निहित सौन्दर्य, सरस्वती पब्लिकेशन, मुम्बई ।
- मिस्त्री, डॉ0 आबान0 ई : पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएँ : केकी0 एस0 जिजिना पब्लिकेशन्स, मुम्बई 1991।
- वशिष्ठ, पं0 सत्यनारायण : तबले पर दिल्ली और पूरब : संगीत कार्यालय हाथरस।
- शुक्ल, योगमाया, तबले का उद्गम विकास और वादन शैलियाँ, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली 1987।

पत्रिका –

- शर्मा, डॉ0 नीलू, संगीत कला विहार, मिरज महाराष्ट्र, जनवरी 2013।